[Shri K. T. Kosalram]

dedication to teaching has also been undermined by the Government of Tamil Nadu deciding to have no examination upto 5th standard and the proposal to have no examination up to 8th standard is also under active consideration of the State Government.

The Central Planning Commission feels that this programme has led to diversion of resources from Plan projects; this apprehension has been confirmed by the diversion of foodgrains and funds given under NREP to this programme by the State Government.

Besides upsetting the economic well-being of the State by catering to the development of brawn and not to the brain, this nutritious meal scheme will result in breeding beasts of burden in Tamil Nadu. The parents throughout the State are in deep anguish that the educational needs of their wards are being neglected. I demand a thorough re-appraisal of this scheme by the Centre before commending to other developing countries

(ix) Liberalisation of rules for Indians returning from abroad in respect of goods brought by them.

श्री रीत लाल प्रसाद वर्मा (कोडरमा): विश्व के विकसित एवं अविकसित देशों जैसे अमरीका, यूरोप, खाड़ी के देशों, अफ्रीकी देशों, एशियाई देशों में भारत के लाखों की संख्या में विज्ञान एवं टैक्नोलाजी अभियांत्रिकी, चिकित्सा-विज्ञान, अध्यापन, साहित्य-सृजन, योग, धर्म एवं निर्माण-प्रायोजनों हेतु कुशल श्रमिकों के नाम पर अस्थायी रूप से कार्यरत रह करोड़ों रुपये मासिक विदेशी मुद्रा हासिल कर रहे हैं। इन भारतीयों ने अपने को पराकाष्ठा तक पहुंचा कर भारत का नाम भी ऊंचा किया है। कई देशों में इनकी नियुक्ति विदेशों में धाक जमाने तथा हजारों हजार नागरिकता के अधिकार प्राप्त करने पर वहां के मूलवासियों ने भारत भगाने का भी आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया है।

इस प्रकार भारतीयों को अर्जित बचत विदेशी मुद्रा के अपव्यय के लिए उन्हें विवश होना पड़ रहा है। ऐसी परिस्थिति में वे सभी जब अपने देश के परिवार के लिए नये पुराने मशीन एवं संयंत्र, इलैक्ट्रानिक्स, कपड़े एवं रेडीमेड पोशाक तथा अन्य उपयोगी औद्योगिक लाभ हेतु सामग्री लाने पर बन्दरगाहों तथा हवाई अड्डों पर कस्टम अधिकारी यमराज की तरह नाना भय दे कर परेशान कर आधे सामान हज्म कर जाते हैं। इससे विदेशों से वापिस आ कर भारत में उद्योग धंधे लगाने तथा विदेशी मुद्रा को दूसरे रूप में अपने देश में लाने से हतोत्साहित हो चुके हैं और वे पानी की तरह अपव्यय कर रहे हैं।

ऐसी परिस्थिति में मैं भारत सरकार से आग्रह करना चाहूंगा कि प्रधान मंत्री, वाणिज्य मंत्री एवं वित्त मंत्री गम्भीरतापूर्वक इस महत्वपूर्ण विषय पर विचार करें तथा ऐसे लोगों के लिए भारतीय मुद्रा के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों के दृष्टिकोण से उन्हें बीस से पच्चीस हजार रुपये तक के उपयोगी सामानों का लाने की छूट प्रदान करें और अधिक मूल्यवान उद्योग का मशीनों में भी उत्साहवर्द्धक छूट प्रदान करें ताकि भारत के औद्योगीकरण में श्रीवृद्धि हो तथा विशेषतः ऐसे लोग भारत सहर्ष लौटने में प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

1508 hrs.

[**Dr. Rajendra Kumari Bajpayee** in the Chair].

(x) Shortage of Rice in Kerala

PROF. P. J. KURIEN (Mavelikara): Kerala is once again going to be under